ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-1* Issue-4* May- 2016
Innovation The Research Concept

संगीत के प्रचार–प्रसार में 'मीडिया' की भूमिका

राजेन्द्र माहेश्वरी
व्याख्याता,
संगीत विभाग,
जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय, कोटा,
राजस्थान, भारत

सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनसंचार के साधन किसी भी कला को आमजन तक सुगमता से पहुंचा सकते हैं। वर्तमान समय में यह माध्यम किसी भी कला का एक अपरिहार्य अंग बन गया है।

मुख्य शब्द : मीडिया,नृत, संगीत, प्रचार,संस्कृति।

प्रस्तावना

संगीतः– ''गीत् वाद्यं च नृत त्रय संगीत मुच्चते '' संगीत की यह परिभाषा शास्त्रों में व्यक्त की गई है। गीत अर्थात गायन, वांद्य अर्थान वादन तथा नृत अर्थान नृत्य से है। इन तीनों माध्यम द्वारा व्यक्त की गयी भावनायें संगीत की श्रेणी में आती है।

पुरातन काल पर नजर डाले तो हमें पता चलता है कि, संगीत मानव की सभ्यता के साथ–साथ विकास करता आया है। यद्यपि हमारे राग रंग वही है लेकिन उसका विस्तार हुआ है। जो संगीत कुछ वर्गों तक सीमित था वो धीरे धीरे उनसे मुक्त होकर सभी ओर फेल गया। संगीत में परम्परा बहुत महत्वपूर्ण है। आजादि के बाद देश में संगीत संबंधित कोई स्पष्ट धारा नहीं थी। हमारे संगीत के कुछ विद्वानों यथा भातखंडे जी, वी.डी.पलुस्कर आदि अनेक वाग्गेयकारों ने संगीत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है ।हिन्दुस्तान में संगीत की दो धारायें प्रचलित है। हिन्दुस्तानी व कर्नाटकी। दोनों ही धाराओं का विकास एक साथ हुआ। उत्तर भारत में अनेक विदेशी सभ्यताओं के आने से इसका रूप कुछ मिश्रित हो गया ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर संगीत के प्रचार प्रसार के अनेक प्रयास किये गये और किये जा रहे है। संगीत की श्रीवृद्धि में ''मीडिया'' तंत्र की भूमिका क्या है वह कितना सक्षम है इस क्षेत्र को नया आयम देने में। इन सबके निष्कर्ष से पहले यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान संदर्भ में मीडिया का क्या अर्थ है मीडिया अर्थात माध्यम या यूं कहे कि, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक वस्तु से दूसरी वस्तु के बीच की कड़ि मीडियम कहलाती है। वर्तमान समय में मीडिया के अनेक साधन है। संचार क्रान्ति के बाद तो इसका स्थान महत्वपूर्ण हो गया है।

संगीत में मीडिया के साधन निम्न हैः–

1. मुद्रित मीडिया
2. दृश्य–श्रृव्य मीडिया
3. संस्थागत मीडिया

मुद्रित मीडिया

इसके अंतर्गत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र आदि में प्रकाशित होने वाले लेख –जीवनियां आदि आते है। प्रायः हम पाते है कि, लोकप्रिय पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में संगीत संबधि जानकारी हेतु पाठक के लिय समय समय पर सामाग्री का प्रकाशन

किया जाता है। संगीत की कई गूढ़ बातें उसके व्यवहार संबंधि कई बिनदुओं का प्रकाशन होने से आम पाठक उसके प्रति आकर्षित होता है। तथा उसकी जिज्ञासा का सामधान होता है। कई बड़े कलाकारों की जीवनिया उनकी संघर्ष–यात्रा को पड़ने से नये संगीत के विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा प्राप्त होती है तथा मार्गदर्शन प्राप्त होता है। कई बार किसी विशेषज्ञ का वार्तालाप छपता है और उसके कई अनसुलझे प्रश्नों का हल सांगितिक रूची वाले पाठकों को लाभ पहुंचाता है। इस प्रकार

मुद्रित मीडिया जन–जन तक संगीत के प्रचार प्रसार में अपनी भूमिका का सफल निर्वाहन कर रहा है।

दृश्य–श्रृव्य मीडिया

वर्तमान समय में यह माध्यम अत्यन्त प्रभावशाली हो गया है। इसके अंतर्गत इलेक्ट्रोनिक माध्यम यथा –रेडियो, टी0वी0, टेप रिकोडर, सी0डी0, इन्टरनेट आदि आते है। इस माध्यम ने कला– कलाकार व श्रोताओं की माध्य की दूरी कम कर दी है। आज इन माध्यमों के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। रेडियो ने सबसे पहले संगीत को जन–जन तक पहुंचा और पहुंचा रहा है। इसके प्रमुख रूप से कार्यक्रम संगीत आधारित ही होते है। जिनमें फिल्म संगीत, सुगत संगीत, लोक संगीत,आधारित वर्गों में विभक्त होते है। अन्य माध्यम टी0वी0 है जिसमें श्रव्य के साथ–साथ कलाकार की तस्वीर भी श्रोताओं तक पहुंचती है। यह दोनों माध्यम संगीत के प्रचार–प्रसार में अपनी महती भूमिका निभा रहे है। बड़े बड़े शहरों में जहां श्रेष्ठ कलाकारों के कार्यक्रम होते है उनका रसास्वादन दूर दराज के स्थानों पर बैठै हुये श्रोता भी प्राप्त कर सकते है। आज केबल संस्कृति के कारण संगीत क्षेत्र के प्रतिभावों के अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम दिखाये जा रहे है।

संस्थागत मीडिया

इसके अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक कला संस्थायें आती है। जो कला संगीत के विकास, प्रचार–प्रसार के लिए कटिबद्ध है। इनमें कुछ संस्था सरकारी तथा अन्य गैर सरकारी संस्था है। सरकारी संस्थाओं में संगीत नाटक अकादमी, नेहरू युवा केन्द्र, जवाहर कला केन्द्र आदि प्रमुख है। यह संस्थायें अपने बजट के अनुसार विभिन्न संगीत के कार्यक्रम, सेमिनार, अभिमुखि कार्यक्रम आयोजित करती है। संस्थाओं द्वारा समय–समय पर कलाकारों को अनुबंधित कर छात्रों को संगीत की उच्चतर शिक्षा भी प्रदान की जाती है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान योजनाओं के तहत कलाकारों व छात्रों को विदेश में कार्यक्रम करने भेजा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य मीडिया के विभिन्न माध्यम किस प्रकार संगीत को आगे बढ़ाने में सहायक हो सकते है उसको रेखांकित करना है। वर्तमान समय में किसी भी कला को आमजन तक सहज एवं सुलभ उपलब्ध कराना तथा उसके बारे मे बताना यह सब संचार माध्यमों से ही संभव है। संगीत कला को दृश्य–श्रृव्य के माध्यमों के द्वारा सूदुर बैठे श्रोंताओं को भी उस कला का रसास्वादन संचार माध्यमों के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार मीडिया अपने विभिन्न माध्यमों के द्वारा संगीत के विकास में अपना योगदान कर रहा है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि, मीडिया का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इसका अर्थ केवल मुद्रित मीडिया न होकर वो सब माध्यम है जो कला का आदान–प्रदान करने में सहायक है। वर्तमान समय तीव्र गति का है। इस समय मीडिया की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गिरिश चन्द्र उप्रेति– भारतीय संगीत (1996)*
2. *तुलसी राम – देवांगन (1964)*
   गोविन्द राव राजूरकर – संगीत शास्त्र पराग (1984)
3. *आमलदास शर्मा – भक्ति संगीत (1990)*
4. *डॉ. संजीव भानावत – भारत के संचार माध्यम (2002)*
5. *डॉ. संजीव भानावत – इलेक्ट्रोनिक मीडिया (2009)*
6. *ल.एन. गर्ग–संगीत विशारद (2009)*